आर्योदय
ARYODAYE

Aryodaye Weekly No. 284 ARYA SABHA MAURITIUS 1st Mar. to 9th Mar. 2014

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

MATRI BHUMI KE PRATI HAMARA KARTAVYA
NOTRE DEVOIR ENVERS NOTRE MERE-PATRIE

ओ३म् ।। सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।

Om ! Satyam brihat, ritam, ugram, dikshā,
Tapo brahma yajyaha prithivim dhārayanti.
Sā no bhutasya, bhavyasya patni uranne
lokam prithivi naha krinotu.

Atharva Véda 12/1/1
(Prithivi Sukta)

Glossaire / Shabdārtha

Satyam – la vérité, **Brihat** – grand, **Ritam** – la vertu, l'honnêteté, le scrupule, la probité (observation rigoureuse des devoirs, de la justice et de la morale), **Ugram** –sévère, dure, âpre, rigoureux, stricte, intransigeant, **Dikshā** – un engagement solennel, la persévérance, **Brahma – Brahmacharya** – celui ou celle qui pratique le célibat, la chasteté et la discipline pour l'acqisition de l'éducation et du savoir - vivre dans sa vie, et manifeste un comportement exemplaire dans la société, **Tapo** – la pratique d'ascétisme, c'est-à-dire, ensemble des pratiques d'abnégation ayant un but spirituel ou religieux.

Yajyaha – (i) La pratique d'abnégation, c'est-a-dire le sacrifice, de ce qui est essentiel pour le bien d'autrui.
(ii) La pratique des rituels –
(a) Dev-puja ou Dev-Yajna
(b) Satsang ou Sangatikaran (une assemblée en groupe pour la prière)
(c) Faire des donations ou des sacrifices

Prithivim dhārayanti – celui qui soutient la terre dans l'espace.

Bhutasya bhavasya patni – celui qui nous a bienveillamment accordé sa protection dans le passé et continuera de la faire à l'avenir.

Sa naha prithivi – c'est la terre où nous mourrons tous un jour, **naha** – nous, pour nous, le nôtre, la nôtre, **Uranne lokam** – l'univers immense ou infini **krinotu** – celui qui fait ou qui crée.

cont. on pg. 3

N. Ghoorah

स्वराज्य बने सुराज्य

डा० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के., आर्य रत्न

ओ३म्।। इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ।।

ऋग्वेदः मण्डल १, सूक्त ८०, मंत्र १

शब्दार्थ :- **इत्था** - इस प्रकार से, इस हेतु से, **हि** - निश्चय से, **इत्** - ही, **मदे** - आनन्द में, **सोमे** - ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाले में, **ब्रह्मा** - चारों वेदों के जानने वाला महान् ज्ञानी, **चकार** - करे, **वर्धनम्** - बढ़ती को, **शविष्ठ** - अत्यन्त बल से, **वज्रिन्** - हे शक्तिशालिन् (शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न सभापति), **ओजसा** - अपने पराक्रम से, **पृथिव्याः** - पृथिवी के, **निःशशा** - दूर कर दे, **अहिम्** - मेघ को, **अर्चन्-अनु** - अनुकूलता से सत्कार करता हुआ, **स्वराज्यम्** - अपने राज्य की।

महर्षि दयानन्द प्रस्तुत ऋचा के भावार्थ में लिखते हैं – मनुष्यों को चाहिए कि चक्रवर्ती राज्य की सामग्री इकट्ठी कर और उसकी रक्षा करके विद्या और सुख की निरन्तर वृद्धि करें ।

उपर्युक्त मन्त्र में 'स्वराज्य' शब्द विशेष विचारणीय है। वर्तमान विश्व में अधिकतर प्रजातन्त्रात्मक शासन है। प्राचीन समय में राजतन्त्र था। उपर्युक्त मन्त्र का उपदेश है कि यदि कोई राजा अपने राज्य को बढ़ाना चाहे, या उसको सुन्दर बनाकर उसमें आनन्द पाना चाहे तो उसे तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

१. जैसे ब्रह्मज्ञानी अपने ज्ञान को चारों वेदों के द्वारा बढ़ाता है, वैसे ही वह अपने राज्य का ज्ञान प्राप्त करके उसे उन्नत करे ।

२. पृथ्वी के साम्राज्य को पाने के लिए वह अपने मन, आत्मा और बुद्धि के साथ शारीरिक शक्ति को बढ़ाए।

३. जैसे सूर्य मेघ को निःशेष दूर करता है, वैसे ही अपनी श्रद्धा के बल से स्वराज्य का सम्मान करके, उसे सुराज्य बनाये ।

महामना श्री बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज्य के महत्व को भली भाँति समझा था। निश्चयतः उन्होंने स्वराज्य का सन्देश महर्षि दयानन्द से पाया था और महर्षि ने वेद से। श्री तिलक जी ने घोषणा की थी कि स्वराज्य मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है भारत-भक्त तिलक के ये शब्द भारतवासियों के कर्ण-कुहरों में गूँज उठे। फलतः सभी की धमनियों का रक्त गरम हो उठा। भारतीय वीरों ने अपने प्राणों को बलिवेदी पर चढ़ाकर देश को स्वतन्त्र किया। १५ अगस्त सन् १९४७ से भारतवासी परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वराज्य में साँस ले रहे हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

देश-प्रेम की भावना

प्रेम भाव के साथ जीना प्रत्येक नागरिक का सर्वोत्तम गुण है। आपसी प्रेम बढ़ाने से सुख, शान्ति तथा आनन्द का राज्य होता है। प्रेम-भावना जागरित होने से परिवार, समाज एवं देश की प्रगति होती है। प्रेम एक दूसरे को मिलाने का कार्य करता है, एकता-बल प्रदान करता है। हर एक व्यक्ति का परम कर्तव्य है कि वह सभी लोगों से प्रेम बढ़ा कर जीएँ।

एक सच्चा देश प्रेमी वह होता है, जो अपने परिवार, समाज के साथ-साथ अपने प्यारे देश से बराबर प्यार करता है। उसके प्रेमभाव से जितना उत्थान परिवार तथा समाज को होता है, उतना ही उत्थान राष्ट्र को भी होता है। ऐसा प्राणी स्वदेश-रक्षा निमित्त अपने प्राण को निछावर कर देता है।

मनुष्य में जब प्रेम की भावना उत्पन्न हो जाती है तो वह कभी भी किसी से द्रोह नहीं करता है। किसी को हानि नहीं पहुँचाता है। वह सब का भला चाहता है क्योंकि प्रेम-पाश में बँध जाने से द्रोह की कुटिल भावना दूर हो जाती है। देश का हर एक नागरिक अगर प्रेम भाव से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय हित करने की आदत डालेगा तो निस्संदेह उसके देश का विकास होता जाएगा। स्वार्थांध बनकर जीवन बसर करेगा तो वह अपने हित के कारण देश में तरह-तरह की समस्याएँ उत्पन्न करेगा। मतभेद पैदा करके अपने सुखी परिवार को दुखी बना देगा, सुदृढ़ समाज को निर्बल कर देगा और समृद्धशाली देश को भी पतन की ओर पहुँचा देगा। यह ध्यान रहे कि एक देश में जीकर देश-द्रोही बनना मूर्खता का प्रमाण है ।

एक देश के नागरिक को अपने देश के हित में सदा कार्य करना चाहिए। महा त्यागी, तपस्वी, पुरुषार्थी बनकर अपनी मातृभूमि की सेवा करनी चाहिए। उसे कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए, जिससे देश की हानि हो, उसकी छबि खराब हो। एक देशवासी चाहे गरीब हो या धनी, नौकर या मालिक, भिखारी या पूँजीपति, प्रजा या राजनेता, उसे स्वदेश प्रेम बढ़ाते रहना चाहिए। उसे एक श्रेष्ठ नागरिक की हैसियत से अपने प्यारे देश की रक्षा करनी चाहिए ।

देश के सिपाही तो अपने देश की रक्षा करने के लिए युद्ध में लड़ते-लड़ते अपने प्राणों की बाज़ी लगा देते हैं। वे मरते दम तक देश के शत्रुओं का सामना करते रहते हैं। उन्हीं महा बलिदानी देशभक्तों की तरह प्रत्येक नागरिक को भी अपने देश के लिए त्यागपूर्ण कर्म निभाते रहने चाहिए ।

हमारे पूर्वजों की अद्भुत देश-भक्ति से हमारा पराधीन देश सन् १२ मार्च १९६८ ई० को स्वतन्त्र हुआ। स्वतन्त्रता के आंदोलन में जिन देश-भक्तों ने तप-त्याग के साथ अपने जीवन को समर्पित कर दिया है, हम उन तपस्वियों के प्रति नतमस्तक हैं। हम सभी स्वाधीन नागरिक उनके ऋणी रहेंगे।

आगामी १२ मार्च को हमारे देश का ४६ वाँ स्वतन्त्रता दिवस है। हमें बड़ी धूमधाम से अपना राष्ट्रीय पर्व आयोजित करना चाहिए। अपने घरों की छत पर बड़े गर्व के साथ चौरंगा ध्वज फहराना चाहिए। उस दिन अपनी जन्म-भूमि के हित में त्याग-पूर्ण कर्म करने का प्रण लेना चाहिए, तभी हम सच्चे नागरिक कहलाने के अधिकारी होंगे।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारे राजनेताओं को सद्बुद्धि और सद्भावनाएँ प्रदान करें, ताकि वे अपने बौद्धिक बल और सद्व्यवहारों से सारी जनता के हित में कार्य करते रहें। हमारा मनोहर देश सदा हिन्द महासागर का चमकता तारा बनकर चमकता रहे और विश्व में अपनी ख्याति बढ़ाता जाए।

परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि हम महाकालों, दैविक प्रकोपों तथा भयंकर रोगों से दूर रहें। हमारा चौरंगा झंडा ऊँचा रहे, देश हमारा प्रगति-पथ पर अग्रसर होता रहे। नाम इस द्वीप का विश्व में रोशन होता रहे। जय मॉरीशस !

बालचन्द तानाकूर

स्वराज्य बने सुराज्य

डा० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

ओ३म्।। इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ।।

ऋग्वेदः मण्डल १, सूक्त ८०, मंत्र १

पृष्ठ १ का शेष भाग

वर्तमान समय में विश्व के अनेक परतन्त्र देश स्वतन्त्र होकर सम्मान का जीवन जीने लगे हैं। १२ मार्च सन् १९६८ से मॉरीशस भी एक स्वतन्त्र देश है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मॉरीशस को लघु भारत की संज्ञा से अभिहित किया था। स्वराज्य मिलने पर मॉरीशस विद्या की ओर द्रुत गति से अग्रसर हुआ। देखते-देखते यह देश सुख-समृद्धि के शिखर पर आसीन हो गया ।

'स्वराज्य' तथा 'स्वतन्त्र' में भेद है। 'राज्य' शब्द प्रकाश का प्रतीक है और 'तन्त्र' शासन का। शासन करने के लिए प्रकाश का होना आवश्यक है। यह प्रकाश ज्ञान से प्राप्त होता। उपर्युक्त मन्त्र का यही सन्देश है कि सभी मनुष्य ज्ञान प्राप्त करें। राजा वा शासक को विशेषतया राजनीति का ज्ञान पाना परमावश्यक है।

राजा या शासक को बाज पक्षी की भाँति चौकन्ना रहना चाहिए, ताकि कोई शत्रु उसका बाल बाँका न कर सके। उसे इन्द्र की भाँति धन, बल, वीरता, दूरदर्शिता आदि से समृद्ध होना चाहिए, तभी वह शत्रुओं का नाश कर सकता है। ऋग्वेद का उपर्युक्त मन्त्र कह रहा है कि हे इन्द्र के समान ऐश्वर्यशालिन् ! तू पृथ्वी पर ही आकाश को उतार कर सूर्य की भाँति मेघरूपी शत्रुओं का नाश कर दे। जैसे जल बहकर कूड़े कर्कट को दूर करता है, वैसे ही पृथ्वी के दोषों को दूर कर दे । जब घने बादल उमड़-घुमड़ कर आते हैं और सूर्य के ओज को भी ओट में डाल देते हैं, तब सूर्य अन्दर-ही-अन्दर उन का भेदन करता हुआ, उनको जल की भाँति पिघला देता है। वैसे ही हे राजन् तू भी शत्रुओं के मध्य में रहकर अपने न्याय तथा धर्माचरण युक्त व्यवहार से उन शत्रुओं को पिघला दे, ताकि वे तेरे मित्र बनकर तेरी शरण में आ जायें, जिससे तेरे राज्य का विस्तार हो और तू सूर्य के समान पृथ्वी पर चमक उठे।

राजा को चाहिए कि वह असंख्यात शुभ कर्मों द्वारा अपने प्रकाश को फैलाकर विविध प्रकार के ऐश्वर्य को अर्जित करके अपनी प्रजाओं की रक्षा करते हुए निरन्तर अपने स्वराज्य का मान करके उत्तम राज्य की स्थापना करे।

प्रजा भी इसी प्रकार के राजा की चाहना करती है, जो शिकारी की भाँति अपने शत्रुओं पर दृष्टि रखता हो, अपनी उत्तम बुद्धि से कपटियों का नाश करता हो तथा अपने राज्य का आदर करता हुआ उसको उत्तम बनाता है।

उपर्युक्त ऋचा उपदेश दे रही है कि राजा शक्तिशाली हो। यह तभी सम्भव है, जब राजा की सेनाओं की शक्ति इतनी हो कि असंख्य जलपोतों को, हवाई मार्गों से चलने वाले वायुपोतों को तथा पृथ्वी पर चलने वाली सेनाओं को, अपने शस्त्रास्त्रों से वह वश में करते हुए अपने राज्य में सुराज्य की स्थापना कर सके। राजा के अन्दर इतनी चेतनता हो, इतनी ओजस्विता हो कि सभी उसके अनुशासन का पालन करें।

सुराज्य की स्थापना में प्रजाओं के भी कर्तव्य हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने ऐसे राजा के प्रति सद्भावना रखें, जो अपने असंख्य शुभ कर्मों से उनकी सहायता करता है। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि वह केवल राजा ही नहीं, बल्कि ब्रह्म-ज्ञान के साथ-साथ अन्नादि से भी समृद्ध है। राजा-प्रजा परस्पर विरोध न करके छोटे-बड़े सब प्रेम से रहें, तभी सुख की प्राप्ति हो सकेगी ।

ऋग्वेद की इस ऋचा ने जो उपदेश, आदेश और सन्देश दिया, उसे रघुकुल के राजाओं ने शिरोधार्य किया था। राम के पूर्वज महाराज रघु का शौर्य, बल, पराक्रम ऐसा ही था। उनके अनुशासन में रहकर सभी उनके मित्र बनकर उनका आदर-सत्कार करते थे। राजा रघु को अपने अश्वमेध यज्ञ में मैत्री भाव से उपहार रूप में अमूल्य धन प्राप्त हुआ था, जिसका उन्होंने सर्वस्व दान कर दिया था। यही सुराज्य का अनुपम उदाहरण है।

स्वराज्य के बारे में वेद ने बड़ी सुन्दर कल्पना की है। सूर्य का तेज इतना महान् है कि जब वह मेघ को काटने के लिए अपना तेज डालता है, तब भयभीत हुई बिजली थर-थर काँपती है। बिजली का चमकना उसके भयभीत होने का प्रतीक है।

ऐसे ही राजा सूर्य की भाँति चमकता हुआ अपनी सहसेनाओं के साथ युद्ध-भूमि में छलियों एवं दम्भियों का नाश करके अपने राज्य को बढ़ाये और समृद्ध करे।

स्वराज्य में मानवमात्र ही नहीं, प्रत्युत इसमें स्थावर - जंगम सभी आते हैं। राजा को चाहिए कि स्थिर रहने वाली प्रकृति के साथ ही पशु-पक्षियों की भी रक्षा करे, ताकि मानवों को इन सबसे लाभ होता रहे।

शासक-प्रशासकों को उसी तरह नियम पर चलते रहना चाहिए, जैसे सभी ग्रह-उपग्रह सूर्य के प्रभाव से नियमित चलते हैं। प्रशासक गण अपने पद का दुरुपयोग न करें, निर्धनों के बल पर अपना महल खड़ा न करें, अन्यथा सुराज्य की स्थापना कदापि हो न सकेगी।

उत्तम विद्यावान्, तन, मन और आत्मा से बलवान्, श्रेष्ठ कर्म करने वाले पुरुषार्थी जन, अपने उत्तरदायित्व को ईमानदारी से निभाने वाले कर्मचारीगण, वेदों के प्रवक्ता, शुभ गुणों से युक्त, शुद्ध, बुद्ध, तपस्वी आत्माएँ एवं कृषि और वाणिज्य से देश को धन-धान्य से सम्पन्न करने वाले वैश्य जन स्वराज्य को सुराज्य बनाने में योगदान देते हैं।

सुराज्य में बसने वाले जन ही आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। सुराज्य के अभिलाषियों को सर्वप्रथम अपनी भूमि के प्रति अपनत्व की भावना रखनी चाहिए। शासकों को कर्मवीरों, युद्धवीरों, दानवीरों, धर्मवीरों और विद्यावीरों का सम्मान करना चाहिए। न्यायाधीशों को न्यायकारी परमात्मा की भाँति न्याय करना चाहिए। वैदिक राज्य की स्थापना करने का अनवरत प्रयास होते रहना चाहिए।

डी.ए.वी डिग्री कॉलिज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह

श्रीमती शांति सोलिक मोहाबीर, एम.ए.

यत्र-तत्र सर्वत्र पाप शोर मचा रहा है। सदैव नया काण्ड दृष्टिगोचर हो रहा है। जिस द्रुत गति से पाप आगे बढ़ रहा है, उसे देख संसार दाँतों तले ऊँगली दबा रहा है। फिर भी धरती टिकी हुई है। पुण्य की भला क्या बिसात कि वह पाप से टक्कर लेने की बात सोचे। परन्तु पुण्य अकेला थोड़े ही है। उसके साथ है एक से एक बढ़कर दाता-दानी लोग। अज्ञानता को दूर भगाकर ज्ञान की स्थापना करनेवाले विद्यादानियों के दम पर मानवता और अच्छाई सुरक्षित हैं।

डी.ए.वी डिग्री कॉलिज में विद्यादानी लोग बिना कुछ लिए विद्या का दान देकर छात्र-छात्राओं की अविद्या को दूर भगाने में रत हैं। इनका श्रम फलीभूत होता है। २०१३ की एस.सी. एवं एछ.एस.सी की परीक्षाओं में इनके छात्र-छात्राएँ सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए हैं। उत्तीर्ण हुईं छात्राओं में कई पुरोहिताएँ भी हैं। इन पुरोहिताओं का सम्मान रविवार १६.०२.१४ को न्यू ग्रोव आर्य समाज के 'Dr Hansa Gunesee Educational Centre' में किया गया; परन्तु इनके शिक्षकों का सम्मान शनिवार १५.०२.१४ को डी.ए.वी डिग्री कॉलिज में किया गया।

कार्यक्रम में कई महानुभाव उपस्थित थे। डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज के डीन डॉ० उदयनारायण गंगू, आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान, उपप्रधान, मंत्री एवं अंतरंग सदस्य, विश्व हिन्दी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल, भारत के लेखक एवं फिल्मकार श्री उदय प्रकाश की उपस्थिति में इन विद्यादानियों को सम्मानित किया गया । अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि में जो शिक्षक अपना योगदान दे रहे हैं, उन्हें कोटिशः धन्यवाद है। इन शिक्षकों के नाम इस प्रकार हैं : डा० चेतना शर्मा बद्री, श्री धरमदेव गंगू, श्री विकास रामधनी, श्री प्रकाश सिचर्ण, श्री धरमवीर गंगू, श्री ज्ञान धनुकचन्द, श्रीमती यालिनी यालापा, श्रीमती किरण दलहमसिंह, श्रीमती रत्नभूषिता पुचुआ, सुश्री संगीता सम्पत्त और सुश्री नालिनी घूरा। उपर्युक्त सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को उपहार में पुस्तकें देकर सम्मानित किया गया ।

दूसरे दिन, १६ फरवरी को न्यू ग्रोव के नवनिमित डॉ हंसा गणेशी भवन में आयोजित कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं डा० हंसा गणेशी जी और विशिष्ट अतिथि थे श्री शिव सुन्दर वाघेला जी। आर्य सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन नीऊर, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम, सभा-मंत्री हरिदेव जी रामधनी आदि महानुभावों के सन्देश हुए।

उस अवसर पर दिये गये मेरे भाषण का सारांश अद्योलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत है –

महान् नीतिज्ञ महात्मा विदुर कहते हैं –
'अविद्याः पुरुषः शोच्यः'

अर्थात् विद्याहीन पुरुष के लिए शोक करना चाहिए। मानव शोक नहीं, आनंद चाहता है। आनंद-प्राप्ति हेतु वह विद्या की ओर मुड़ता है। विद्या-प्राप्ति के लिए उसे तीन गुण अपनाने पड़ते हैं – अच्छे गुरु के चयन की योग्यता, आलस्य का त्याग और अनुशासन का पालन।

क्षेत्र चाहे कोई भी हो, मनुष्य की चयन-शक्ति में यदि त्रुटि हो तो कितनी भी शक्ति वह लगा ले, सफलता उसके हाथ नहीं आएगी। छात्र में भी निराली चयन-शक्ति होनी चाहिए। प्रत्येक छात्र के जीवन में एक गुरु का होना अत्यावश्यक है। आज या तो गुरु है ही नहीं, या गलत व्यक्ति को गुरु का दर्जा दे दिया जाता है। गलत गुरु के बारे में कबीरदास जी कहते हैं कि –

जाका गुरु अंधला चेला खरा निरंध।
अंधा अंधा ठेलिया दुन्यु कूप पड़ंत ।।

अंधे को पथप्रदर्शक मानकर चलनेवाले अंधे की अधोगति ही होती है। कबीरदास जी के कथनानुसार ऐसे गुरु के चयन करने में हमारी बुद्धिमता है, जो सिक़लीगर के समान होता है। जो गुरु अपने ज्ञान की शक्ति से छात्र की बुद्धि को रगड़-रगड़ कर प्रकाशित करदे, छात्र को ऐसे ही गुरु चुनना चाहिए।

सच्चे गुरु का चयन करने के साथ ही छात्र को एक धैर्यवान् श्रोता सिद्ध होना चाहिए। धैर्य से छात्र के मन में स्थिरता आती है और यही मन की स्थिरता छात्र की निरंतर परिश्रम करने में बाध्य करती है, अन्यथा आलस्य छात्र को अपने वश में ले लेता है। चाणक्य जी महाराज कहते हैं – **'आलस्योपहताविद्याः'** अर्थात् आलस्य के कारण विद्या नष्ट हो जाती है। धैर्य छात्र को सुनना सिखाता है । धैर्य उतना ही बुलवाता है, जितना कि आवश्यकता हो। शिक्षा और धैर्य के सम्बन्ध में पाश्चात्य विचारक कहते हैं कि – "Education is the ability to listen to almost anything without losing your temper or your self-confidence."

अनुशासन छात्र का तीसरा गुण होता है । जीवन में नियमों में बंधकर ही हम स्वतंत्र होते हैं। हालाँकि यह बात विरोधाभास लगती है, फिर भी यही सत्य है। नियमों का पालन करने से छात्र का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास सम्भव होता है। आहार की शुद्धता, शारीरिक कसरत, सकारात्मक सोच, जीवन के प्रति दृष्टिकोण की शुद्धता, आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता इत्यादि इन सब का जीवन में होना छात्र के संतुलित जीवन का प्रमाण है।

उक्त तीनों गुणों को यदि छात्र अपने जीवन में उतार लेता है तो अर्जुन की भाँति जीवन-लक्ष्य को बेध पाने में सक्षम रहेगा।

इस सम्मान समारोह का आयोजन आर्य सभा की वेद प्रचार समिति के सहयोग से किया गया था। डी.ए.वी कॉलिज की छात्राओं द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया गया। प्रेमिला तूफ़ानी जी के स्वागत भाषण के पश्चात् कार्य का संचालन किया श्री धरमवीर गंगू जी ने। डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज के छात्र श्री हिमेश ने अपने साथियों के साथ संगीत का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर धन्यवाद समर्पण किया पंडित धनेश्वर दायबू ने।

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस
वार्षिक बृहदाधिवेशन

ता० ३ मार्च २०१४

आर्य सभा के आजीवन सदस्यों, शाखा समाजों के प्रतिनिधियों और मन्त्रियों की सेवा में

सेवा में सादर सूचित हो कि रविवार ता० २३ मार्च २०१४ को १.०० बजे दिन में आर्य सभा मॉरीशस का वार्षिक बृहदाधिवेशन, आर्य भवन, १, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई में होगा ।

अतः ठीक समय पर पधारने की कृपा करें। आप की उपस्थिति अति आवश्यक है।

कार्य-सूची निम्न प्रकार है :-

१. प्रधान द्वारा स्वागत भाषण एवं सन् २०१३ की रिपोर्ट प्रस्तुत करना ।
२. गत बृहदाधिवेशन के कार्य विवरण को सुनना और सम्पुष्ट करना ।
३. २०१३ के वार्षिक वृतान्त तथा आय-व्यय को सुनना तथा सम्पुष्ट करना ।
४. २०१४ के वार्षिक अनुमानित आय-व्यय 'बजट' पर विचार करना और पारित करना ।
५. २०१४ के लिए भावी कार्यक्रम को स्वीकार करना ।
६. सरकार द्वारा त्रेंकबार में लगभग दस बीघे ज़मीन का परिग्रहण ।
७. प्रशासनिक दफ़्तर का निर्माण करना ।
८. रोज़ बेल में कॉलिज का निर्माण ।
९. कोई अन्य विषय - (प्रधान के अनुमति से) ।
१०. शान्ति पाठ ।

हरिदेव रामधनी
मन्त्री

ARYA SABHA MAURITIUS
ANNUAL GENERAL MEETING

To All Life Members, Representative Members and Secretaries of Branches of Arya Sabha Mauritius

3rd March 2014

You are kindly requested to attend the Annual General Meeting of the Arya Sabha Mauritius to be held on Sunday 23rd March 2014 at 1.00 p.m. at Arya Bhawan, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis.

AGENDA

1.0 Welcome Address and President's Report for the year 2013.
2.0 To hear and confirm the Minutes of Proceedings of the previous Annual General Meeting.
3.0 To hear and approve the Annual Report and the Statement of Accounts for the year 2013.
4.0 To consider and approve the Estimate Budget for the year 2014.
5.0 To approve the programme of work for the year 2014.
6.0 To approve the compulsory acquisition by the Government for about 10 Acres of Land at Tranquebar.
7.0 To construct an administrative block for Arya Sabha.
8.0 To construct a college at Rose Belle.
9.0 Any Other Business (AOB) with the consent of the chair.
10.0 Shanti Path (Prayer) and adjournment.

H. Ramdhony
Secretary

O M
The President & Members
ARYA SABHA MAURITIUS
cordially invite you to the
National celebrations of the 46th Independence Anniversary
and
22nd Anniversary of the Accession of Mauritius to the Status of Republic

DATE : Saturday 8th March 2014
TIME : 1.30 p.m.
VENUE : Arya Bhawan, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis

Programme : Yajna, Bhajan, Kirtan and messages by eminent personalities

Chief Guest : *Dr. the Hon. Ahmed Rashid Beebeejaun, GCSK, FRCP – Deputy Prime Minister, Minister of Energy & Public Utilities.*

Hon. Ministers, Members of Parliament and various other eminent personalities will grace the function by their presence.

We hope to be honoured by your distinguished presence.

B. Tanakoor *President* H. Ramdhony *Secretary* B. Jeewuth *Treasurer*

INNER TRANSFORMATION

Dipnarain Beegun

Change : *From Charcoal mind to diamond mind*
From narrow vision to broader vision
From dark motive to good intention
From indolence to passionate action
From violent reaction to peaceful solution.

Do not allow evil and violence to override you and take you to your downfall.
You are pure and perfect.
You are God.
Do not become a hunting dog chasing and killing innocent beings.
Be a living tree to serve others.
Be a running river to flow for others.

सामाजिक गतिविधि

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

गत गुरुवार ता० २७.०२.१४ को लावेनिर आर्य मंदिर के प्रांगण में धूमधाम के साथ दयानन्द बोधोत्सव मनाया गया। मौके पर गणराज्य के राष्ट्रपति श्रीयुक्त राजेश्वर परयाग मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत के प्रतिनिधि महामहिम श्री अनूपकुमार मुद्गल उपस्थित थे। इन दोनों महानुभावों के अलावा मंत्री माननीय सुरेन दयाल, राष्ट्रीय सभा माननीय श्री प्रवीण जगनाथ और श्रीमती लीला देवी दुखन ने भी उपस्थित होकर कार्य की शोभा बढ़ाई। देश के नवों ज़िलों के प्रतिनिधि भारी तादाद से आए हुए थे।

राष्ट्रपति श्री राजकेश्वर परयाग जी ने अपने भाषण से लोगों को मुग्ध कर दिया। अन्य बातों के अलावा उन्होंने कहा कि समाज की परिस्थिति इतनी बिगड़ चुकी है और दिन व दिन बिगड़ती जा रही है कि लगता है स्वामी दयानन्द को पुनः आना पड़ेगा। हवन, यज्ञ, पूजा-पाठ बस नहीं हो रहा है, हमें दयानन्द के आदर्श जीवन को जीना चाहिए तब हम पार पायेंगे, नहीं तो देश ऐसी दशा में पहुँच जायेगा जहाँ से निकलना कठिन हो जाएगा।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूपकुमार मुद्गल जी का पहला आगमन था आर्य समाज के कार्य में। उन्होंने अपना लिखित भाषण न देकर बिना तैयारी का एक सारगर्भित भाषण दिया। उन्होंने कहा कि मैं अपना लिखित भाषण एक दूसरे मौके के लिए रखकर आप से बातें करना चाहता हूँ। उन्होंने आरम्भ में ही कहा कि मेरी यह बातचीत Diplomatic न होकर दिल से निकला भाषण है । सब से पहले बताना चाहूँगा कि मैं डी.ए.वी. कॉलिज का पढ़ा हुआ हूँ। स्वामी दयानन्द जी ने एक अच्छे जीवन जीने के लिए बहुत अच्छे-अच्छे सिद्धान्त बताये हैं सत्य की खोज सर्वोपरि है। स्वामी जी ने कहा सत्य को ढूँढो। ज्ञान के मार्ग द्वारा सत्य को ढूँढ़ने की बात समझायी। सत्य की तलाश कभी समाप्त नहीं होती। सत्य अथाह सागर है। उसकी पकड़ अलग अलग है। सत्य के साथ असत्य भी लगा हुआ होता है। अगर वैज्ञानिक रूप से अलग करो, पहचान कर अंगीकार करो। सत्य कर्म रूकता नहीं।

स्वामी जी ने सत्य को पहचानने के लिए प्रश्न पूछा, पूछता गया और अन्त में मूलशंकर से महर्षि बन गया।

स्वामी जी सत्य को पुल बनाकर सहनशीलता, मित्रता, दया, न्याय और विनम्रता तक पहुँच गए । ज्ञान से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता ।

सभी उपस्थित लोगों ने राष्ट्रपति और भारतीय उच्चायुक्त के भाषणों को सुना और तहे दिल से सराहा ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St, Port Louis, Tel: 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778, Email : aryamu@intnet.mu, www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के, आर्य रत्न*
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD. Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles, Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Om ! Satyam brihat, ritam, ugram, dikshā, Tapo brahma yajyaha prithivim dhārayanti. Sā no bhutasya, bhavyasya patni uranne lokam prithivi naha krinotu.

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

O Seigneur ! Que la terre, sur laquelle nous vivons, nous procure la joie, le bonheur et la paix, car nous faisons de notre mieux pour la soutenir.

Si nous pensons faire progresser notre pays en adoptant une attitude ou une politique basée sur le mensonge, la haine, la vengeance, la traitrise, la ruse, la malhonnêteté, la convoitise, la violence etc., nous avons grand tort. Nous commettrons une erreur monumentale. Nous n'y parviendrons jamais.

Pour la prospérité de notre mère-patrie une des conditions primordiales requises en son peuple doit-être **la vérité**.

La vérité est une valeur fondamentale et universelle qui soutient l'univers.

La connaissance de la vérité ne doit pas être conçue comme une fin en soi, mais elle doit être traduite en action avec rigueur et intransigeance pour instaurer la confiance et la stabilité dans le pays.

Tant que notre action soit basée sur la vérité, l'honnêteté, la discipline, la persévérance, le sacrifice de nos intérêts personnels, la rigueur, le dévouement ou l'engagement total, et la détermination pour atteindre le but fixé, autant notre mère-patrie va progresser.

A vrai dire, la terre d'un pays n'est pas la propriété privée d'un roi, d'un gouvernement ou d'un individu, mais elle appartient à tous ses habitants qui ont la culture de ces six grandes valeurs humaines suivantes, qui, en d'autres mots, forment les six piliers sur lesquels se repose l'édifice de l'état :

La vérité
La vertu – disposition constante qui contribue à faire du bien et à éviter le mal.
Le dévouement à une cause.
La persévérance ou le dur labeur.
La détermination à aller de l'avant et à franchir tous les obstacles de son chemin afin de parvenir à son but.
Le sacrifice de son égo.

Conséquemment il nous incombe d'adopter ces grands principes, de nous mettre au service de notre pays en vrai patriote en tenant compte des expériences du passé afin de pouvoir bien planifier et bâtir un meilleur avenir pour notre mère-patrie de sorte qu'elle connaisse un ère de progrès, de prospérité, de gloire et de paix.

The Relevance of Rishi Bodh

Dr Roodrasen Neewoor, Arya Bhushan, G.O.S.K,
Honorary President Arya Sabha Mauritius

Rishi Bodh is celebrated to mark the enlightenment of an outstanding youth, Moolshankar, on the auspicious occasion of Shiv Ratri. The latter was destined to become a Rishi, an uncontested Vedic scholar, a great philosopher as well as the greatest reformer that modern India has produced.

Rishi Dayanand has left his imprint in almost all walks of life in India and abroad where Indians have settled. In the field of Education, he advocated education for all He was of the view that education should be provided by the state free of charge and everyone should benefit from the same irrespective of caste, class or creed. It should be recalled that those days the literacy rate was only 2% in India and the bulk of women were illiterate as they had been debarred from learning altogether. Superstition as well as blind faith was wife. Swamiji was of the opinion that the root cause of these problems was lack of knowledge. He therefore stressed on the promotion of knowledge.

He infused a sense of patriotism among the Indians and was the first to raise the slogan of swarajya in modern times. In fact, he coined the word Swaraj in 1874 in his Magnum Opus – "the light of Truth". More than a decade prior to the creation of the Congress party. Which was in 1885. He had pleaded for the use of Khedi and Swadeshi -- local made products. His pressing call for Harijan uplift, emancipation of women. Hindi as the national language for India, prohibition, his drive for diffusing knowledge and dispelling ignorance are facts that speak for themselves.

Mahatma Gandhi as a matter of fact followed his footsteps in many respects. His remarks that nobody has done as much as Swami Dayanand for the betterment of the down trodden and also his praiseworthy statements on Arya Samaj are quite revealing. Dr Radhakrishnan's statement about Swami Dayanand is equally important. He said "Many provisions about social welfare in the constitution of India owe their inspiration to the teachings of Swami Dayanand.

To provide help to the needy is another aspect on which Swamiji had put a lot of emphasis – this can be noted from his 9th principle which reads as follows "one should not be content with one's welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.

Swami Dayanand had mastered all the four Vedas and he stressed that the Vedas are the store house of knowledge. Their messages are universal and they are meant for humanity at large. Back to Vedas therefore was his clarion call. While going through the life of this great Rishi; we realize the relevance of Rishi Bodh. Had the enlightenment of this unique personality not taken place on the auspicious occasion of Siva Ratri in Tankara in the year 1838 what would have been the fate of India to-day is a big question mark. Hence, the importance and relevance of Rishi Bodh.

Discipline :

Discipline plays a remarkable role in every sphere of one's life, whether it is at home, at school or even at a job place. Discipline is the only way through which one can practise how to abide by rules and regulations. Abiding by rules promotes good human behaviour to form a better society. A true disciplinarian is one who has the guts to take responsibilities of his behaviour and does not blame anyone for his unfortunate actions or decisions. Discipline teaches one how to make smart decisions. It brings not only success but also teaches mastery of the mind. Only through discipline can one conquer oneself.

Let us look at the definition of discipline. The Oxford Advanced Dictionary defines discipline as 'The practice of training people to obey rules and regulations and orders and to punish them if they fail to do so.'

Many learned persons have expressed their views about discipline. For example, according to Mohandas Karamchand Gandhi -- *'A born democrat is a born disciplinarian.'*
The American philosopher and author M.Adler believes that -- *'True freedom is impossible without a mind made free by discipline.'*

For quite some time, a decline in social and moral values has been observed. This decline has led to the downfall of humanity. People are becoming more self-centered. Values like compassion and honesty are gradually getting lost. People blame the inventions of science and technology for this downfall, but they do not know that it is the total absence of discipline which is responsible for such downfall.

There are three major causes which lead to the absence of discipline. The first one is the lack of role models for our new generation.Let us take an example of a child who considers his parents, teachers, the elders of his society and even the political leaders of his country as his role models. Now, imagine a scenario where all his role models are undisciplined. The child may easily pick up their wrong habits or attitudes thinking that they are normal and acceptable.

The fact that the citizens of our world are geared more towards the material world is the second cause. Several people have tossed out the values and culture which kept our world united. The only culture which prevails is that of achieving wealth and power at any cost, even if it means adopting negative qualities such as hatred, dishonesty, greed and jealousy. A person who believes in this culture can never become disciplined, as discipline walks together with truth.

The third cause is the lack of self-control. Horace has rightly said 'Rule your mind or it will rule you.' People have become slaves of their senses, they have become captives of their desires. This eventually stops one from being self-disciplined. Absence of discipline bears some dreadful consequences. A person, who has never been disciplined since childhood, has few chances to succeed. Many undisciplined youngsters resort to drugs. Some may even start practising terrorism and smuggling. Others, who are captives of their desires, find them in cases of rapes, adultery and even murder.

Discipline is the backbone of character. There are many people who have achieved great success by being strict disciplinarians. For example: Albert Einstein- who wrote the theory of Relativity at merely the age of twenty-six.

Roger Bannister, who broke the four miles minute record at the age of twenty-five.

Discipline is one of those pillars of life which contributes greatly in one's upliftment.

Therefore, let us all seek discipline and find our true freedom.

Poornasha Kumari Mohabeer
Form VI

The Changing Role of Women in Mauritius with the Advent of Independence

Roshni Narain, B.A,MSc,Dip.

Globalization is having a profound effect on the world. Economies are now interconnected and distances seem to be shrinking. Traditional work roles are changing. Cultures are being transformed. In short, the world of 2014 is not the world of 1938, 1958, 1968, or 1998. Change is occurring rapidly in some cultures and slowly in others. But it is occurring, as societies are creating futures that may be unrecognizable when compared to their past. Mauritius is one of the cultures that are undergoing significant societal change. One of the major change areas involves women and the roles they play in creating and sustaining a cohesive, viable, and successful society. The four most significant roles involving Mauritian women are societal, familial, educational, and work roles. All of these roles are intertwined, and distinguishing, where one begins and another ends is often difficult.

With the advent of independence in 1968, the traditional mentality vis-à-vis women in Mauritius has changed greatly. Very few women enjoyed freedom to seek education or any kind of training in the past 3 decades. Majority women were viewed as second-class citizens and this was justified as being the natural result of the biological differences between the two sexes. Men were the sole breadwinners; the role of women was relegated. All decision-taking was in the hands of the men. Moreover, the freedom of women was restricted, as most families were extended.

After independence, much emphasis was laid on industrialization. Industrial zones were being set up and incentives were given for foreign investment. In the early seventies, many women began to leave their homes and start working, thus adding to the monthly income of the family. Today more than 90% of women work in various sectors of the Mauritian economy. These result in women enjoying economic independence, their status in society is rising and in most cases they are enjoying more dignity. The whole approach towards women has somehow changed. Women today are no longer regarded as the inferior sex and most enjoy more equality.

Economic independence has also brought changes in the structure of the family unit. We are having more nuclear families. In such a step, the traditional role of women began to lose importance. Both husband and wife are supposed to have equal role to play and to live on equal terms.

Many organizations have emerged consisting mainly of intellectuals, both men and women,in order to enhance the society and making it a better place to live in as well as ensuring that the acquired rights of women are not being jeopardized.

Another factor which has played a major role in boosting the status of the Mauritian women is education. Free education was granted in 1976. Since then, many more women and girls began to have access to education. Today, more girls reach tertiary education. Moreover, legislation has been passed to make education compulsory till the age of sixteen. Girls completing tertiary education are thus able to occupy posts of responsibility. In almost all sectors, women are present, performing jobs once considered as male-oriented like, police force, driving vehicles and management posts.

Today, Mauritian women are waiting longer to get married; and unlike their mothers, Mauritian women are less willing to stay in an unhappy marriage and this is either resulting in quick divorce or unhappy married life. This will no doubt result in the decline of birth rate in years to come.

While women have gone a long way towards claiming their rights and freedom, similar to the independence of this country, they now need to sustain that acquisition and move towards deepening their relationship towards the community. Family represents stability, and success of the family is the central focus in Mauritian life.

The role of the Mauritian woman is instrumental to the success of the family. The woman's duty is also to run the household and maintain family peace and balance. History and tradition have been of paramount importance in Japanese society. But now Mauritian women are caught between tradition and change and somehow find it difficult to emerge fully or rather manage their multiple roles.

This situation becomes more and more difficult when we recently find out how the country has witnessed a huge wave of violence against women.

It is now time that this new emerging disease be taken care of so that it does not gnaw our society and the freedom so difficultly acquired.

GRAND PORT DISTRICT CELEBRATES
Vidya Divas

A pompous function was organized on Sunday 23rd February, 2014 at the Smt. L. P. Govindramen Vedic Centre, Trois Boutiques, Union Vale by the Grand Port Arya Zila Parishad under the aegis of Arya Sabha Mauritius in collaboration with Vidya Samiti to honour the hard working students who have performed well in the recent exams. The students sat for Hindi Examinations at the level of Sixth Standard and Dharmic Examinations – Sidhant Pravesh and Sidhant Ratna - conducted by Vidya Samiti and Examinations Board of Arya Sabha Mauritius in December, 2013.

It is worthy of note that one student aged 62, a retired civil servant with senior status in government service in the person of Shri Jeeanduth Boodhun, was among the Sixth Standard candidates and came out with flying colours an inspiration for our youngsters of present generation.

"Sone mein Soohaga". The remarkable event consisted of other two important items: honouring two young persons of high caliber. On that auspicious occasion the Grand Port Arya Zila Parishad gave a deserving reception to Smt. Dr. Madhuri Ramdharry Phd and Shri Vijaye Prakash Gopee *(the only HSC Laureate – 2013 in the District of Grand Port).*

Among the eminent personalities who graced the function by their distinguished presence were Dr Roodrasen Neewoor-Honorary Chairman of Arya Sabha Mauritius, Dr. O.N. Gangoo, Dean of DAV Degree College and President of Ved Prachaar Samiti, Shri Prem Pirthee-High official of the Public Sector and Shri Prabhakar Jeewooth, President, Vidya Samiti. The credit of success goes to the President and Members of GP Arya Zila Parishad and the guiding spirit of Shri Harrydev Ramdhony Arya Ratna, the General Secretary of Arya Sabha Mauritius. The valuable contribution of Pt. Shyam Daiboo, Secretary, Purohit Mandal, needs a special mention. The function was indeed a success.

S.P. Torul PDSM, Arya Bhushan,
Coodinator,
Grand Port Arya Zila Parishad